ST. LAWRENCE HIGH SCHOOL
A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION
CLASS: 12

पाठ्य सामग्री

SUBJECT :Hindi DATE: 23. 01 .2021

पाठ नाम - हो गई है पीर पर्वत -सी

कवि परिचय:

दुष्यंत कुमार जन्म: 1 सितम्बर, 1933; मृत्यु: 30 दिसम्बर, 1975) एक हिंदी कवि और ग़ज़लकार थे। समकालीन हिन्दी कविता विशेषकर हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में जो लोकप्रियता दुष्यंत कुमार को मिली, वो दशकों बाद विरले किसी कवि को नसीब होती है। दुष्यंत एक कालजयी कवि हैं और ऐसे कवि समय काल में परिवर्तन हो जाने के बाद भी प्रासंगिक रहते हैं। दुष्यंत का लेखन का स्वर सड़क से संसद तक गूँजता है। इस कवि ने कविता, गीत, ग़ज़ल, काव्य, नाटक, कथा आदि सभी विधाओं में लेखन किया लेकिन गज़लों की अपार लोकप्रियता ने अन्य विधाओं को नेपथ्य में डाल दिया।

जीवन परिचय

दुष्यंत कुमार का जन्म बिजनौर जनपद (उत्तर प्रदेश) के ग्राम राजपुर नवादा में 1 सितम्बर, 1933 को हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत कुछ दिन आकाशवाणी, भोपाल में असिस्टेंट प्रोड्यूसर रहे। इलाहाबाद में कमलेश्वर, मार्कण्डेय और दुष्यंत की दोस्ती बहुत लोकप्रिय थी। वास्तविक जीवन में दुष्यंत बहुत, सहज और मनमौजी व्यक्ति थे। कथाकार कमलेश्वर बाद में दुष्यंत के समधी भी हुए। दुष्यंत का पूरा नाम दुष्यंत कुमार त्यागी था। प्रारम्भ में दुष्यंत कुमार परदेशी के नाम से लेखन करते थे।

कृतियाँ

इन्होंने 'एक कंठ विषपायी', 'सूर्य का स्वागत', 'आवाज़ों के घेरे', 'जलते हुए वन का बसंत' 'छोटे-छोटे सवाल' और दूसरी गद्य तथा कविता की किताबों का सृजन किया। जिस समय दुष्यंत कुमार साहित्य की दुनिया में अपने कदम रखे उस समय भोपाल के दो प्रगतिशील शायरों ताज भोपाली तथा क़ैफ़ भोपाली का ग़ज़लों की दुनिया पर राज था। हिन्दी में भी उस समय अज्ञेय तथा गजानन माधव मुक्तिबोध की कठिन कविताओं का बोलबाला था। उस समय आम आदमी के लिए नागार्जुन तथा धूमिल जैसे कुछ कवि ही बच गए थे। इस समय सिर्फ 42 वर्ष के जीवन में दुष्यंत कुमार ने अपार ख्याति अर्जित की।

प्रकाशित रचनाएं

काव्यसंग्रह	एकांकी
• सूर्य का स्वागत	

• **आवाज़ों के घेरे** • **जलते हुए वन का वसन्त** **उपन्यास** • **छोटे-छोटे सवाल** • **आँगन में एक वृक्ष** • **दुहरी ज़िंदगी।**	• **मन के कोण** **नाटक** • **और मसीहा मर गया** **गज़ल-संग्रह** • **साये में धूप** **काव्य नाटक** • **एक कण्ठ विषपायी**

कविता का अर्थ

1) "हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए। "

कवि दुष्यंत कुमार के अनुसार समाज में कई प्रकार की विसंगतियाँ देखने को मिलती हैं। मनुष्य-मनुष्य से ईर्ष्या, घृणा करते रहने से पीड़ाएँ पर्वत के समान फैल गई हैं। इसे पिघलना चाहिए। हिमालय से गंगा को निकलना चाहिए।

2) "आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी, शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।"

आज यह दीवार ऐसे हिल रही है, मानो खिड़कियों व दरवाजों के लगे हुए परदे हिल रहे हैं। वास्तव में होना यह है कि सम्पूर्ण बुनियाद ही हिल जाये, ताकि फिर से कुछ नया निर्माण किया जा सके। ऐसी शर्त रख रहे हैं कि परिवर्तन की चाह है।

3) "हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में, हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।"

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर तथा गाँव में हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।आज़ादी के देश के भ्रष्ट नेताओं ने आम आदमी का इतना शोषण किया कि वह चलतीफिरती लाश में तब्दील हो गया है | अब समय आ गया है कि इस शोषण के खिलाफ आवाज़ बुलंद किया जाय |

4) "सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं, मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।"

समाज को यदि बदलना है, तो केवल आवाज देने या घोषणा करने से कुछ होगा नहीं। कवि का अटूट विश्वास है कि सिर्फ हंगामा करना उनका उद्देश्य नहीं है बल्कि पूरी कोशिश रहेगी कि सूरत ही बदल दी जाये। तात्पर्य यह है कि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। उसके लिए जन-जागृति अति आवश्यक है।

5) "मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही, हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।"

कवि अन्त में जागृत करते हुए कहते हैं कि मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में ही सहीआग होनी चाहिए, लेकिन वह आग सदा जलती रहनी चाहिए।जब तक लोगों के दिलों में यह आग जलती रहेगी,तो एक न एक दिन यह बदलाव जरुर होगा |

NAME-PRITI TIWARI